

# सनञ्च धातु

(Desiderative Verbs)

१। धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा (३।१।१) — (ईष्-धातुर समानकर्तृक धातुर उञ्चुर सेइ विषयक इच्छा वुक्काइते विकल्ने सन् हय। सन् एर स थाके।) सन्-प्रत्ययान्त धातु पूर्व धातु इइते ष्वतन्त्र। এইজন্য इहार रूप पूर्वधातुर रूपेर न्याय नहे। (सन्-प्रत्ययान्त धातुर रूप भ्रुदिगनीय धातुर न्याय।) यथा, पठितुमिच्छति (पठ् + सन् + लट् ति) = पिपठिषति। पातुमिच्छति (पा + सन् + लट् ति) = पिपासति, लोट्—पिपासतु, लङ्—अपिपासं, विधिलिङ्—पिपासें, लृट्—पिपासिष्यति। लिट् विभक्तिते (प्रत्ययान्त वलिया) आम् हय एवं आम् एर परे क्, ङ् ओ अस् एर अनुप्रयोग हय। यथा, पिपासाङ्कार, पिपासाङ्भव, पिपासामास।

२। अचेतनस्य इच्छाया असंभवेऽपि उपचारात् सन्—(यदिओ अचेतन पदार्थेर इच्छा संभव नहे तथापि तत्सम्बन्धीय इच्छा कल्पना कराय तখন धातुर उञ्चुर सन् हय।) यथा, नदीकूलं पतितुमिच्छति पतनोन्मुखं भवति—नदीकूलं पिपतिषति। এইरूप, गृहं निनङ्कति इत्यादि श्ले उन्मुखता अर्थ वुक्काय।

३। आशङ्कायां सन् वक्तव्यः (वा) — (प्रकृतपक्षे इच्छा आछे किना ना जाना गेलेओ यदि ऐरूप आशङ्का हय अर्थात् संभावना थाके, ताहा इइलेओ धातुर उञ्चुर सन् हय। यथा, श्वा मुमृषति) (The dog is on the point of death)।

४। पूर्ववत् सनः (१।३।६२) — (ये धातु ये पदी सन् प्रत्यय करिले सेइ धातु सेइ पदीइ थाके। यथा, पठ्-धातु परस्मैपदी, এইजन्य पिपठिष धातुओ परस्मैपदी—पिपठिषति, लङ्-धातु आत्मनेपदी, এইजन्य लिप्स् (लङ् + सन्) धातुओ आत्मनेपदी—लिप्सते।

५। ङञ्-श्च-स्मृ-दृशां सनः (१।३।५९) — किञ्च ङञ्, श्च, स्मृ ओ दृश् धातु सनञ्च इइले आत्मनेपदी हय। यथा, जिङ्गासते, शुश्रूषते, सुस्मृषते, दिदृक्षते।

৬। গুপ্-তিজ্-কিত্-সন্ (৩।১।৫)—গুপ্, তিজ্ ও কিত্-  
ধাতুর উত্তর স্বার্থে নিত্য সন্ হয়। যথা, সাধুঃ অধর্মং জুগুপ্সতে (নিন্দতি) ;  
মুনিঃ অপরাধং তিতিক্ষতে (সহতে) ; বৈদ্যঃ আতুরং চিকিৎসতি ; শিষ্যঃ শাস্ত্রে  
চিকিৎসতি (সন্দেহি)।

৭। মান্-বধ্-দান্-শান্ভ্যো দীর্ঘশ্চাভ্যাসস্য (৩।১।৬)  
—মান্, বধ্, দান্ ও শান্ ধাতুর উত্তর নিত্য স্বার্থে সন্ হয় এবং দ্বিরুক্তের  
পূর্বভাগের স্বর দীর্ঘ হয়। যথা, শিষ্যঃ শাস্ত্রং মীমাংসতে (বিচারয়তি); সাধুঃ  
ব্যাধং বীভৎসতে (নিন্দতি); মুনিঃ দীদাংসতি (অকুটিলীভবতি) ; ভটঃ খড়াং  
শীশাংসতি (তীক্ষ্ণীকরোতি)।